ALL INDIA CONGRESS COMMITTEE
24, AKBAR ROAD, NEW DELHI
COMMUNICATION DEPARTMENT

Highlights of Press Briefing **17 November, 2020**

Shri Ajay Maken, General Secretary, AICC addressed media via video conferencing today.

श्री अजय माकन ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा – नमस्कार। आप सब लोगों का बहुत-बहुत स्वागत है। मैं राजस्थान से सीधे ब्रीफिंग पर आया हूँ। कोरोना के ऊपर ये स्पेशल ब्रीफिंग हमने रखी है और ये बहुत महत्वपूर्ण है। आप सब लोगों को जानकर बड़ा आश्चर्य होगा, दुख की बात भी है और ये सरकार की अकर्मण्यता की भी निशानी है कि हिंदुस्तान के अंदर कोविड से जिन हर पांच व्यक्ति की मृत्यु हो रही है, उन हर पांच में से एक व्यक्ति दिल्ली का है और दिल्ली की सरकार जो कि नेशनल कैपिटल है और एक तरीके से यूनियन टैरीटरी भी है और इसलिए दिल्ली के मुख्यमंत्री और केन्द्र के गृहमंत्री दिल्ली की इस स्थिति के लिए दोनों बराबर के जिम्मेदार हैं और नी जर्क रिएक्शन और केवल विज्ञापन, इसके अलावा इन लोगों ने, दोनों ने कुछ भी नहीं किया है।

आप हैरान होंगे कि भारत के हर पांच में से एक व्यक्ति जब दिल्ली के अंदर उसकी मृत्यु हो रही है आज दिल्ली के अंदर टोटल संक्रमण दर प्रति मिलियन दुनिया की बाकी देशों से तुलना करें तो हम ब्राजील से, यूके से, फ्रांस से, इटली से, ये सारे के सारे जितने भी देश हैं, उनसे भी ज्यादा दिल्ली के अंदर अकेले संक्रमण की दर है। पूरे देश के अंदर जो संक्रमण की दर है, जो पूरे देश के अंदर है, उससे भी हम सब के सब लोग, मैं ये आपको स्ट्रैटिस्टिक में बताना चाहता हूँ, पूरे देश के अंदर, प्रति मिलियन 6,400 व्यक्ति प्रति मिलियन, 6,407 व्यक्ति एग्जेक्ट जो केसेसे हैं, पॉप्यूलेशन के हिसाब से और दिल्ली अकेले के अंदर ये 29,140 केस प्रति मिलियन है यानि पूरे के पूरे देश से लगभग पांच गुना ज्यादा संक्रमण अकेले दिल्ली के अंदर हैं। दिल्ली के अंदर 459 व्यक्ति प्रति मिलियन उनकी मृत्यु दर है। जो दिल्ली के अंदर ये और जिस राज्य का मैं प्रभारी हूँ, राजस्थान में वहाँ पर मात्र 30 व्यक्ति प्रति मिलियन की मृत्यु दर है, दिल्ली के अंदर राजस्थान से लगभग 15 गुना ज्यादा, 459 व्यक्ति की मृत्यु दर है, प्रति मिलियन। कितना बड़ा फर्क, 15 गुना राजस्थान है और अभी भी पडोसी राज्यों से हर एक से कई-कई गुना ज्यादा दिल्ली के अंदर मृत्यु दर, संक्रमण दर, दोनों के दोनों हैं। तो क्या दोनों की दोनों सरकारें यहाँ पर कर रही हैं, सिवाए एडवर्टिजमेंट के, सिवाए लीपा पोती के कुछ भी नहीं यहाँ पर दिल्ली में किया जा रहा है।

मेरे पास एनसीडीसी की रिपोर्ट अक्टूबर के पहले महीने के अंदर जो रिपोर्ट जारी की गई थी, जो डॉ विनोद पॉल नीति आयोग के जो मेम्बर हैं, जो इसके चेयरमैन हैं, उन्होंने इस रिपोर्ट को जारी किया था, इसकी कॉपी भी हम आप सब लोगों को देंगे। ये रिवाइज स्ट्रैट्जी फॉर कंट्रोल ऑफ कोविड-19 वर्जन 3.0 के नाम से ये रिपोर्ट है और ये रिपोर्ट कवर भी बहुत एक्सटेंसीवेली हुई थी। इस रिपोर्ट के हिसाब से दिल्ली के अंदर 15

हजार केसेस प्रतिदिन के हिसाब से होने वाले हैं और अगर जब 15 हजार केसेस दिल्ली के अंदर प्रति दिन के हिसाब से होने वाले हैं तो प्रति मिलियन जो अभी नीति आयोग ने 500 बोला है, वो 500 तक नहीं रहेगा, 15 हजार प्रतिदिन का मतलब 780 केस प्रतिदिन, प्रति मिलियन, प्रतिदिन के हिसाब से 780 केस प्रति दिन ये जाने वाला है, 15 हजार केस पर । तो ये हमारे डॉ वीके पॉल ने एनसीबीसी की तरफ से उनके चेयरमैनशिप में ये रिपोर्ट अक्टूबर पहले सप्ताह के अंदर दिल्ली सरकार को दे दी गई थी तो इन्होंने क्या तैयारी की है, आज हम इनसे ये जानना चाहते हैं। इस रिपोर्ट के अंदर कहा गया है कि 15 हजार के हिसाब से 20 प्रतिशत लोगों को टोटल दिल्ली के अंदर हॉस्पीटलाइजेशन की प्रतिदिन जरुरत पड़ेगी और प्रतिदिन के हिसाब से 15 हजार का 20 प्रतिशत अगर लगाएं तो प्रतिदिन 3,000 लोगों को प्रतिदिन एडिशनल हॉस्पटाइलेजशन की जरुरत पड़ेगी। डॉ. महेश वर्मा कमेटी जो पहले बनाई गई थी, उसमें कहा था कि जितने हॉस्पीटल बैड्स हैं, उसका 20 प्रतिशत आईसीयू के लिए होने चाहिए यानि इस 3 हजार का 20 प्रतिशत 600 को करीब प्रतिदिन आईसीयू बैड्स की जरुरत होनी चाहिए।

अब जो है आईसीयू बैड्स की स्थिति देख लें, ये अभी जो है 4 बजे का डैशबोर्ड है दिल्ली सरकार का, ये मेरे पास में है, इसकी कॉपी भी मैं आपको दे दूंगा। इसके अंदर कुल खाली जो हमारे आईसीयू बैड्स हैं, दिल्ली के अंदर टोटल वैकेंट आईसीयू बैड्स मिलाकर 603 हैं सिर्फ यानि सिर्फ एक दिन का एडीशनल दिन का सिर्फ आईसीयू बैड्स अवेलेबल हैं, यानि उसके नेक्स्ट डे, जो हमारे आगे आने वाले समय में जो जरुरत है, जैसे ये 15 हजार टच करेगा और ये 15 हजार टच करने वाला है, क्योंकि पिछले 2-3 दिन के अंदर टैस्टिंग जो है, वो बहुत कम हुई है, दिवाली की वजह से भाई दूज की वजह से, गोवर्धन पूजा की वजह से और ये इनके रिकॉर्ड हैं, 50 हजार से सीधे 21 हजार, 15 हजार के करीब सिर्फ टैस्ट हुए हैं, जो कि 50 हजार होते थे। अमित शाह जी ने और केजरीवाल जी ने, दोनों ने जो मीटिंग ली है, उसमें कहा है कि हम एक लाख तक टैस्ट लेकर जाएंगे और जैसे की एक लाख तक टैस्ट लेकर जाएंगे, और 15 प्रतिशत अगर पॉजीटिवीटी रेट रहेगा तो 15 हजार ऑटोमेटिकली आएगा ही और जैसे ही ये आयेगा, वैसे ही आईसीयू के ऊपर दबाव पड़ेगा तो उसकी क्या तैयारी अभी की जा रही है, इनके खुद के डैशबोर्ड अभी कहता है कि मात्र 600 बैड इनके खाली हैं और ये सिर्फ एक दिन का ही बोझ ले पाएगा और उससे ज्यादा का बोझ ये ले पाने की स्थिति में नहीं है।

तो आज जब दिल्ली की स्थिति पूरे हमारे देश के अंदर मैंने आपको जैसे बताया जो एवरेज संक्रमण है, दिल्ली पांच गुना उससे आगे हैं। दिल्ली, सारे राज्यों में सबसे ऊपर है, ये पूरे राज्य का हमने एक चार्ट बनाया है, पूरे हर राज्य का, दिल्ली के साथ में जिसका संक्रमण दर प्रति मिलियन पॉप्यूलेशन के हिसाब से किया है और दिल्ली सबसे कहीं ज्यादा आगे है। दिल्ली के नजदीक भी कोई दूसरा राज्य नहीं है। हमने राजस्थान को कंपेयर करके बताया कि कैसे राजस्थान से 15 गुना ज्यादा दिल्ली के अंदर मृत्यु दर है और राजस्थान से कितने गुना ज्यादा दिल्ली के अंदर संक्रमण है।

तो आज अब जो है मुख्य बात पर हम लोग आना चाहते हैं। केजरीवाल जी ने नी जर्क रिएक्शन में, जो हमेशा इनका हॉलमार्क रहा है, दिल्ली सरकार और केन्द्र सरकार के नी जर्क रिएक्शन में उन्होंने कहा है कि सिलेक्टिव चुने हुए मार्केट्स को बंद हम लोग करेंगे। इससे ज्यादा खराब पॉलीसी डिसीजन नहीं हो सकता है कि चुने हुए मार्केट्स को आप लॉकडाउन करेंगे, इससे ज्यादा खराब डिसीजन नहीं हो सकता है। मैं फिर ये

कहना चाहता हूँ आज कि हमारी हेडलाइन, हमारा मेन एम्फेसेज, हमारी प्रेस कांफ्रेंस का ये है, केजरीवाल जी मैं हाथ जोड़कर निवेदन करता हूँ, दिल्ली की जनता पर रहम खाएं और चुनकर सिलेक्टिव लॉकडाउन मार्केट्स का न करें। हॉट स्पॉट मार्केट के अंदर होता है लेकिन हॉट स्पॉट मार्केट के अंदर इसलिए होता है, कि कस्टमर जो वहाँ पर आते हैं, उसकी वजह से मार्केट हॉट स्पॉट होता है। तो अगर आप मार्केट को जो बंद कर देंगे, जहाँ पर ज्यादा आपको लग रहा है कि संक्रमण है, तो आप जब कस्टमर एक मार्केट जो बंद होगा, उसकी जगह दूसरे पर जाएंगे तो आप हॉट स्पॉट एक मार्केट के शिफ्ट करके दूसरी जगह के ऊपर भेज रहे हैं और जिसको खरीदना है, जिसको खरीदारी करनी है, उसको तो खरीदारी करनी ही करनी है। अगर लाजपत नगर बंद कर देंगे, तो डिफेंस कॉलोनी से खरीदेगा। डिफेंस कॉलोनी बंद कर देंगे, तो ग्रेटर कैलाश से खरीदेगा। अगर वो तीनों के तीनों आप बंद कर देंगे, तो कालका जी से खरीदेगा। कालका जी भी ये बंद कर देंगे, तो कहीं और से खरीद लेगा, तो जब एक मार्केट खुलेगी और तीन बंद होंगी, या दो मार्केट बंद होंगी, चार खुलेंगी तो आप सभी जितने भी कस्टमर हैं, उनको आप एक जगह के ऊपर जब धकेल रहे हो तो कंसन्ट्रेसन जब कस्टमर की बढ़ेगी तो वहाँ पर आप संक्रमण फैलाने में मदद नहीं कर रहे हैं तो क्या कर रहे हैं? इसलिए हमारा ये कहना है कि लॉकडाउन हो तो सभी जितने भी मार्केट्स हैं, उन सभी का लॉकडाउन होना चाहिए चुनिंदा मार्केट्स का लॉकडाउन नहीं होना चाहिए। हाँ, अगर आप किसी और कंसीडरेशन, अगर आर्बीट्रेरी पावर्स आप इस्तेमाल करेंगे, जिसका मन आएं, जिस मार्केट एसोसिएशन ने सेवा कर दी उस मार्केट को खोल दिया और दूसरे को बंद कर दिया। या बंद को जब खोलना हो तो सेवा हुई तो खोल दिया गया अगर आपके दिमाग मे ये है, तो मैं कह नहीं सकता नहीं तो कोई और कारण कोई और औचित्य हो ही नहीं सकता कि आप चार में से दो मार्केट खोल देते हो औऱ दो मार्केट बंद कर दें, ताकि भीड जो है, चार मार्केट की एक जगह के ऊपर आए और जो दूसरी जगह के ऊपर जहाँ पर भीड़ होगी, वहाँ पर सब के सब चीज हो। यो ऑड ईवन की तरह नहीं हो सकता, ये एक मार्केट बंद और एक मार्केट खुले के तरीके से नहीं हो सकता है। आप अगर इसको जो स्प्रेड हो रहा है, जो इवन हो रहा है, बराबर से उसको अगर आप एक जगह के ऊपर सारे कस्टमर को भेजोगे तो आप सारे कस्टमर को, जो इसके अंदर संक्रमित नहीं भी हैं, आप उनको भी रिस्क के अंदर डाल रहे हो औऱ इससे खराब पॉलिसी डिसीजन नहीं हो सकता है।

मैं अपने 15 साल, 20 साल के एडमिनिस्ट्रेटिव एक्सपीरियंस के आधार पर केजरीवाल जी आपको सलाह दे रहा हूँ, कृपया करके उसको वापस लें। बंद करना है मार्केट को तो सारे के सारे मार्केट को बंद करें, आप पिक एंड चूज न करें, आप मार्केट का सिलेक्टिव बंद न करें, मैं आज आपको ये सलाह देना चाहता हूँ। इससे खराब डिसीजन नहीं हो सकता दिल्ली के अंदर इतना तेजी से फैलाएंगे कि आप अंदाजा नहीं कर सकते।

दूसरा हम लोग केजरीवाल जी से और अमित शाह जी से कहना चाहते हैं कि दिल्ली के अंदर आईसीयू के बैड्स को पूरी ताकत लगाकर आप लोग बढ़ाएं। केजरीवाल जी, जो आपने अभी 32 करोड़ रुपया अपने दिवाली बैश पर जो खर्च किया है, एडवर्टिजमेंट के ऊपर अगर 32 करोड़ रुपए वो खर्च नहीं किया होता आपने फुल पेज एडवर्टिजमेंट्स के ऊपर और दूसरी जगहों के ऊपर तो आपको मैं कहना चाहता हूँ, दिल्ली में 600 आईसीयू के बैड्स इसी 32 करोड़ रुपए के आप लोग और एड(add) कर सकते थे। इस 32 करोड़ रुपए में 600 आईसीयू के बैड्स और एड हो सकते थे जो आपने दिवाली के ऊपर आपने पूरे दिल्ली के अंदर खर्च किया अपनी फोटो चमकाने के लिए और सारे मीडिया हाऊसेज को ऑब्लाइज करने के लिए आपने

जो एडवर्टिजमेंट का इस्तेमाल 32 करोड़ रुपए का किया है, उस 32 करोड़ रुपए में आप आईसीयू के 600 अतिरिक्त बेड और जोड़ सकते थे। आपने कुछ भी, एक भी बेड ढंग से आप एड नहीं कर पा रहे हैं। सैंट्रल गवर्मेंट से कह रहे हैं कि वो एड करें, प्राईवेट अस्पताल से कह रहे हैं कि वो अपने बेड खोलें, दिल्ली सरकार के अपने 12 हजार बेड हैं, तो उन 12 हजार बेड में से आपको चाहिए कि ज्यादा से ज्यादा आप आईसीयू के अंदर शिफ्ट करें, कनवर्ट करें और जितने आप कनवर्ट करेंगे, तब आप दूसरों को कह सकते हैं कि हम लोगों के बेड जो हैं, हमने किया और आप भी करें। तो मुख्यत: दिल्ली के अंदर इस वक्त दिल्ली संक्रमण के मुहाने पर खड़ी है। हमारे सतेंन्द्र जैन जो हेल्थ मिनिस्टर हैं, वो कहते हैं कि दिल्ली पहले ही पीक देख चुकी है। ये बिल्कुल सरासर गलत है। दिल्ली में पीक, खुद एमसीडी इनकी कह रही है, भारत सरकार कह रही है कि पीक अभी आना है। खुद जो हेल्थ विभाग का सर्कुलर, हैल्थ विभाग के अपने ऑफिशियल से मानते हैं कि पीक अभी आना है, दीवाली अभी-अभी गई है। तो जब ऐसी स्थिति है तो आप लोगों को भ्रमित ना करें, बल्कि लोगों को बताएं कि घर में ही रहें और बाहर तभी निकलें जब बहुत ज्यादा जरुरी है।

तो इसलिए हम ये कहना चाहते हैं कि पूरी की पूरी तरीके से मार्केट बंद होनी चाहिएं, सलेक्टिव नहीं होनी चाहिएं। वर्क फ्रोम होम आपको एनकरेज(प्रोत्साहित) करना चाहिए। सभी के सभी जितने ऑफिसर हैं, उनमें वर्क फ्रोम होम वहाँ से होना चाहिए, इसको एनकरेज करें, ताकि लोग बाहर कम निकलें। मैट्रो से भी और फैलता है, तो उसका कितना चलाना चाहिए, आपको उस चीज को भी देखना चाहिए। लेकिन फिर मैं ये कहना चाहता हूं कि ये सर्विसेस और मार्केट को सीमित तौर पर नहीं होना चाहिए। मैट्रो अगर चले तो बिल्कुल चले, नहीं चले तो बिल्कुल नहीं चले। ये नहीं कि आप मैट्रो की सर्विसेस कम कर दें, सीमित कर दें, ताकि जितने लोग मैट्रो में चलने वाले लोग हैं, वो कंस्ट्रेट होकर जाएं। तो ये स्ट्रैटेजी आपकी बिल्कुल गलत है कि जब आप मैट्रो को आप पूरे दिन चलने की बजाए कुछ ही घंटे के लिए चलाएं और कुछ ही घंटे के अंदर आप अपनी मैट्रो के पैसे तो बचा सकते हैं, लेकिन उससे नुक्सान ये होगा कि सभी के सभी कंस्ट्रेशन वहाँ पर बढ़ जाएगी और लोग वहाँ ज्यादा तादाद में आएंगे।

इसलिए मैं फिर से केजरीवाल जी से कहना चाहता हूं कि पॉलिसी जो आप बनाएं, उस चीज को सोचें, डिस्कस करें, अपोजिशन से भी सलाह लें। हम लोग तो अपने एडमिनिस्ट्रेटिव एक्सपिरियंस के हिसाब से आपको सलाह हम देना चाहते हैं औऱ दिल्ली की जनता के इंट्रस्ट पर सलाह देना चाहते हैं। इसलिए हम ये कहना चाहते हैं कि दिल्ली को आपको स्लो करना चाहिए, दिल्ली के अंदर हमारी जो भी गतिविधियां हो रही हैं और लॉकडाउन अगर हो तो सभी मार्केट भी लॉकडाउन हों, सिलेक्टिव लॉकडाउन दिल्ली के अंदर उससे खतरनाक औऱ खराब चीज नहीं हो सकती।

Shri Ajay Maken said- It is unfortunate that at the moment, out of every five person in the country who are dying because of Covid, one belongs to Delhi. In terms of total affected people by corona virus per million, Delhi is highest in the country, by far highest in the country.

In terms of Covid death per million, we are by far highest in the country, we are much ahead of other countries, even we are much ahead of UK, we are much ahead of France, we are much ahead of Brazil. In India also, the national

average per million people who are Covid affected cases per million population, at the national the average is 6,407, whereas Delhi's average is five times more, which is 29,140 cases per million population that is Delhi's average which is five times more than the national average. Such is a situation in Delhi and instead of fighting this, the Delhi Government and Central Government both are playing games. Both are pushing on to each other the responsibility, whereas they should work collectively, they are not doing that. They should have increased the ICU beds, which they haven't done.

The dashboard, which I have shown clearly shows that Delhi is ill-equipped as far as the ICU beds are concerned. NCDC in its report in the first week of October, this year has already said that Delhi will touch 15 thousand cases per day and we are nearing that. Already we have touched on one day 8,700 cases. So 15 thousand cases per day is something which we may touch, this is what NCDC has said and 20% of such cases would require hospitalisation and 20% of hospitalised cases would require ICU beds, which means every day 600 additional ICU beds would be required and dashboard says that only a little more than 600 vacant ICU beds are available. So, if we touch 15 thousand as we are going to in any case touch 15 thousand cases per day, the total number of ICU beds which we are supposed to require the existing vacant beds would be covered in just one day. So, why then the Delhi Government and Central Government not preparing themselves together to increase the ICU beds in Delhi that is something which is immediately required. Most importantly, the way the haphazard manner and the knee jerk reaction, which the Delhi Government is reacting towards this challenge, it shows very sorry state of affairs.

The worst policy decision would have been to selectively lockdown the markets, which the Delhi Government has recommended to the Lieutenant Governor and the Central Government. You can't selectively lockdown the markets, saying that one market is a hot spot. One market is the hot spot, because of the customers which come over there and it becomes hot spot. If suppose, you closed down four markets and you let only two markets open then all the customers instead of going to four markets they would concentrate only on those two markets and if there is a concentration of customers in just two markets then the spread would be more. So I don't know what is the justification in selectively opening the market and selectively closing the markets? Either all markets should be open or all markets should be closed. My personal view is that all the markets should be closed immediately. It shouldn't be selectively done. Because if you do it selectively, you are forcing people to go to a few particular markets and there when there will be more concentration of people if there will be a more spread of Corona Virus, this is simple logical thing, which the Delhi Government

should think and the Central Government should also think it and they should immediately, all the markets have to be shut down.

As far as the offices are concerned they should be asked to work from home. Now since, like I am doing zoom press conference from my office, why can't' and there are so many other ways by which people can work from home. So for a few days it should be made mandatory that people should work from home. As far as the Metro is concerned, for metro also they should either allow metro to function in totality in full or they should allow metro not to function. So, by allowing metro to function partially, they are forcing the commuters to concentrate in a few metro trains only. So, again Metro also, in my opinion should be shut for a few days, as also the DTC buses. So all such things they have to take a well considered view, logical view, logical policy decision not keeping in interest, the revenue to be earned by the Government but, keeping in mind the public safety and public health and listening the fatality rate, that should be in the mind of the Government before taking any policy decision.

एक प्रश्न पर कि अभी कुछ दिन पहले आपने ट्वीट कर कहा था कि दिल्ली में पूरी तरह से लॉकडाउन लगना चाहिए, अभी के हालात को देखकर कांग्रेस की क्या मांग है कि लॉकडाउन लगना चाहिए? श्री माकन ने कहा कि मैंने पहले भी कहा था कि मार्केट अगर बंद हो तो सारी मार्केट बंद हो। अभी भी हम कह रहे हैं कंपलिट लॉकडाउन मतलब हमारे जो टोटल मार्केट हैं, वो सब के सब बंद होने चाहिएँ, ऑफिस बंद होने चाहिएं। जो गवर्मेंट ये कह रही है कि पार्शल लॉकडाउन(partial lockdown) होना चाहिए, इससे खराब फैसला नहीं हो सकता है। इसलिए हम ये कह रहे हैं एंसेंशियल सर्विस हमारे अलाउ होने चाहिएं, पहले जैसे थे और एंसेंशियल सर्विस के अलावा दूसरे मार्केट हमारे बंद होने चाहिएं और ऑफिस हमारे बंद होने चाहिएं। गवर्मेंट को इसका जो लोगों को जो रोजमर्रा के काम करने वाले लोग हैं, जो डेली वेजिज हैं, जो गरीब लोग हैं, उसको कंपनसेट करने का भी रास्ता निकालना चाहिए। उनके बैंक खाते के अंदर सीधे पैसे इसके तहत जो नुकसान हो रहा है, वो भी साथ-साथ देना चाहिए। तो पूरी एक पॉलिसी इसके अंदर होनी चाहिए और सभी लोगों को कंपनसेट किया जाना चाहिए जिन लोगों को नुकसान हुआ है। लेकिन ये इसका जस्टिफिकेशन नहीं हो सकता कि आधी मार्केट खोल दें और आधी बंद कर दें, इससे तो आप और फैला रहे हैं । इसको रिवेन्यू से नहीं जोडा जाना चाहिए। सरकार की रिवेन्यू अर्न करने की तरफ हमेशा उनकी मंशा रहती है और उस तरह मंशा नहीं रहनी चाहिए, लोगों की जान से बड़ी कोई चीज नहीं है और जिस तरीके से, जिस तेज गति से फैल रहा है, दिल्ली में पोल्यूशन का समय है, आगे जनवरी तक पोल्यूशन और बढ़ेगा। पोल्यूशन दिसंबर, जनवरी में और बढ़ता है, तो जब पोल्यूशन हमारा बढ़ रहा है, दिल्ली के अंदर हमारे रेट बढ़ रहे हैं। 15 हजार के फिगर हमारे पहले ही ऐनसीडीसी ने कहा है और 8,700 एक बार हम क्रोस कर चुके हैं तो 8,700 और 9,000 हम टच कर रहे हैं तो 15,000 जाते हुए पता भी नहीं चलेगा और हमारी कोई तैयारी भी नहीं है। तो या तो हम खोल दें और उसके बाद हमारे आईसीयू बेड नहीं हैं, तो सभी के सभी मरीज जो हैं, यहाँ पर सड़कों के ऊपर बैठे हुए आपको नजर आएंगे अस्पताल के बाहर। या तो उस दृश्य के लिए आप सब तैयार हो जाएं या बंद कर दें। मेरा तो ये मानना था कि दिवाली अगर हम नहीं भी मनाते, मेरा

व्यक्तिगत मानना था, तो शायद बेहतर होता बनस्पत इसके कि बहुत सारे लोगों की ये आखिरी दिवाली हो। मैं अगर कह रहा हूं कि हम लोग अगर इस संक्रमण को आगे रोक नहीं पाए, आईसीयू की दिल्ली में बेड की अवेलेब्लिटी नहीं है, दिल्ली में अस्पताल के बाहर आप आईसीयू के अभाव में आप लोगों को, मरते मरीजों को मरते देखेंगे अगर इस वक्त इसे नहीं किया। मैं कोई एकदम से अलार्म नहीं करना चाहता, लेकिन जो रिपोर्ट हम पढ़ रहे हैं, चाहे पहले महेश वर्मा कमेटी की रिपोर्ट हैं, चाहे ऐनसीडीसी की रिपोर्ट है, ये रिपोर्ट बहुत अलार्मिंग है, स्थिति बहुत खराब होने वाली है। मैं दिल्ली सरकार और केन्द्र सरकार को, अरविंद केजरीवाल और अमित शाह जी, दोनों को कहना चाहता हूं कि दिल्ली राष्ट्र की राजधानी है, यहाँ पर ऐसी सीन क्रियेट मत होने दें कि यहाँ पर अस्पताल के बाहर मरीजों को आईसीयू में ना जाने की वजह से बाहर दम तोड़ते हुए हम सब के सब लोगों को देखना पड़े।

एक अन्य प्रश्न पर कि जेएनयू का नाम बदलने के ऊपर विवाद बढ़ता जा रहा है, भाजपा के एक महासचिव ने जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय का नाम बदल कर विवेकानंद विश्वविद्यालय करने की मांग की है, क्या कहेंगे? श्री माकन ने कहा कि नाम बदलने की राजनीति में हम कभी भी विश्वास नहीं रखते हैं और एक व्यक्ति का नाम बदल कर दूसरे व्यक्ति के नाम पर रखने से मैं समझता हूं कि कोई व्यक्ति छोटा नहीं होता है और कोई व्यक्ति बड़ा नहीं होता है। ये किसी भी महान व्यक्ति चाहे जिनके नाम पर रखा जा रहा है, उनकी गरिमा, उनके नाम की गरिमा के ऊपर भी मैं समझता हूं अच्छी बात नहीं है, उनके नाम की गरिमा के लिए भी कि किसी और का नाम हटाकर उनका नाम रखा जा रहा है। बेहतर ये हो कि जैसे जवाहर लाल नेहरु यूनिवर्सिटी है, उसी प्रकार की स्टेंडर्ड एक और यूनिवर्सिटी आप बनाएं, उससे और अच्छी बनाएं और उसका नाम विवेकानंद यूनिवर्सिटी रखें। किसी एक यूनिवर्सिटी को गिरा कर, नाम उसका हटाकर, दूसरे के नाम पर करना, ये आप कोई विकास का काम तो नहीं कर रहे हैं। बेहतर ये रहे कि आप विवेकानंद जी का हम सब के सब सम्मान करते हैं, हम चाहते हैं कि उनके नाम का हिंदुस्तान के अंदर और राष्ट्र की राजधानी में वैसी यूनिवर्सिटी बन जाए तो उससे अच्छी बात क्या है। लेकिन आप एक नई यूनिवर्सिटी बनाएं, उससे बेहतर स्टेंडर्ड रखें, उससे बेहतर प्रोफेसर लाएं, फैक्लिटी लाएं और इंटरनेशनल लेवल का आप बनाएं तो लकीर मिटाने की जरुरत नहीं है, लकीर से लंबी लकीर खिंचने की जरुरत है, ताकि हम सब के सब लोग प्रेरित हों। नई यूनिवर्सिटी से इन्फ्रास्ट्रक्चर नया क्रियेट हो और हमारे देश के अंदर हमारे छात्रों को और बेहतर जगह मिले जहाँ वो विवेकानंद जी के विचारों से प्रेरित हों। बाकि मैं आपको ये बताना चाहूंगा कि मेरा विवेकानंद से बड़ा पुराना नाता है, क्योंकि उनका और मेरा दोनों का जन्मदिन एक ही है, वो भी 12 जनवरी के हैं और मैं भी 12 जनवरी के हैं। इसलिए मैं कह सकता हूं कि विवेकानंद जी के नाम पर होना चाहिए, मैं खुद बचपन से उनका बहुत बड़ा अनुयायी रहा हूं और उनके नाम पर होना चाहिएं, लेकिन नया बनाएं, बेहतर बनाएं, जेएनयू से बेहतर बनाएं, वो होना चाहिए।

Sd/-
(Dr. Vineet Punia)
Secretary
Communication Deptt,
AICC